thearyasamaj.org

ओ३म्

3rd January 2015

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ओ३म् शांतिधाम
गुरुकुल विद्यालय बेंगलुरू के विद्यार्थी हैदराबाद में

विद्यार्थी सभा प्रधान मंत्री व अन्य अधिकारियों से मिलते हुए

thearyasamaj.org

'पीड़ितों की सेवा मनुष्य का धर्म'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके चारों ओर अपने निकट सम्बन्धी और पड़ोसियों के साथ मित्र व पशु–पक्षी आदि का समुदाय दषष्टिगोचर होता है। समाज में सभी मनुष्यों की शारीरिक, सामाजिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य की स्थिति व आर्थिक स्थिति समान नहीं होती है। इनमें अन्तर हुआ करता है। यह सम्भव है कि एक व्यक्ति आर्थिक दषष्टि से सम्पन्न होने के साथ शारीरिक दषष्टि से भी स्वस्थ हो, शिक्षित व प्रतिष्ठित भी हो परन्तु ऐसा भी सम्भव है कि एक व्यक्ति निर्धन, अशिक्षित व अस्वस्थ या रोगी हो। ऐसी स्थिति में सम्पन्न व्यक्ति का क्या यह कर्तव्य नहीं बनता कि वह समाज के निर्बल लोगों की आर्थिक सहायता व सेवा करे? स्वस्थ युवा व धनी मानी लोगों का कर्तव्य है कि वह समाज के अस्वस्थ व निर्धन लोगों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप यथासम्भव सेवा व आर्थिक सहायता करें जिससे कि वह अपना जीवन सामान्य रूप से व्यतीत कर सकें और समाज के निर्बल वर्ग की भी शारीरिक, बौद्धिक व आत्मिक उन्नति हो सके।

आईये, कुछ चर्चा धर्म की करते हैं। धर्म की अनेक परिभाषायें की जाती हैं जिनमें से एक है कि सभी मनुष्यों अपने जीवन में शुभ गुणों को धारण करना चाहिये। यह शुभ गुण व कर्म क्या हो सकते हैं? व्यक्तिगत गुणों में तो मनुष्य को अपने स्वास्थ्य को अनुकरणीय बनाने के लिए आहार, निद्रा, संयम व व्यायाम आदि के नियमों का पालन करना चाहिये। विद्यालयी व व्यवसायिक शिक्षा व ज्ञान के साथ सामाजिक ज्ञान व आध्यात्मिक ज्ञान में भी पूर्णता प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। शुभ गुणों की चर्चा आने पर पहला गुण तो यह है कि उसे सत्य व धर्म का आचरण करना चाहिये। प्राचीन वैदिक शिक्षा में जब ब्रह्मचारी शिक्षा समाप्त कर गुरूकुल से लौटता था तो दीक्षान्त भाषण में उसका आचार्य जो शिक्षायें देता था उनमें पहली शिक्षा **"सत्यं वद्, धर्म चर तथा स्वाध्यायां मा प्रमदः"** होती थी। आज भी इन शिक्षाओं का महत्व निर्विवाद है। 'सत्यं वद' में हम कह सकते हैं कि मनुष्य के मन, मस्तिष्क व आत्मा में जो ज्ञान है, उसी के अनुरूप उसे व्यवहार करना चाहिये अर्थात् मन, वचन व कर्म में एकता होनी चाहिये। ऐसा नहीं होना चाहिये कि उसका आचरण उसके मन व आत्मा में निहित विचारों के प्रतिकूल हो। मन के ज्ञान के अनुसार ही वचन को बोलना व कर्मों का करना वास्तविक वा यथार्थ ध र्म है। नियमित सदग्रन्थों का स्वाध्याय करने से मनुष्य के बौद्धिक ज्ञान में वृद्धि होने के साथ उसकी आत्मोन्नति भी होती है। अतः स्वाध्याय में प्रमाद करना अपनी आत्मा व जीवन की उन्नति में अवरोध लाना ही कहा जा सकता है। अब सेवा को धर्म से जोड़ कर देखते हैं। मनुस्मृति में धर्म की चर्चा करते हुए कहा गया है कि दूसरों के प्रति वह आचरण कदापि नहीं करना चाहिये जो आचरण हम दूसरे व्यक्तियों से अपने लिए पसन्द न करते हों। जिस प्रकार से हमें दूसरो का झूठ बोलना पसन्द नहीं है तो हमें भी किसी से असत्य का व्यवहार नहीं करना चाहिये। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सत्य बोलना धर्म है। इसी प्रकार से यदि हम कष्ट या मुसीबत में फंस जायें तो हम दूसरों से सहायता की अपेक्षा करते हैं। इसी प्रकार से हमारा भी कर्तव्य है कि यदि हम कहीं किसी को कष्ट या मुसीबत में देंखे तो उसकी मदद करें। यही सिद्धान्त सेवा पर भी लागू होता है। दूसरों की मदद करना ही सेवा है। यदि समाज से दूसरों की मदद करने की भावना का विस्तार व प्रचार–प्रसार हो तो फिर किसी को चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। हम दूसरों की सेवा व मदद करेंगे तो आवश्यकता या आपातकाल में दूसरे भी हमारी मदद अवश्य करेंगे। अतः सभी मनुष्यों को दूसरों की सेवा का व्रत धारण करना चाहिये इससे हमारा समाज सामाजिक दृष्टि से उन्नत व सुखी होगा।

thearyasamaj.org

यज्ञ सनातन वैदिक धर्म संस्कषति का प्रमुख अंग है। यज्ञ देव पूजा, संगतिकरण तथा दान का समन्वित रूप होता है। देव पूजा में ईश्वर सहित सभी 33 जड़ व चेतन देवों की पूजा व सत्कार सम्मिलित है। संगतिकरण का तात्पर्य है कि वेद आदि शास्त्रों के विद्वानों व ज्ञानियों का संगतिकरण कर उनके ज्ञान व अनुभव को प्राप्त करना। यह संगतिकरण विद्वानों के उपदेशों के श्रवण, वार्तालाप, उनसे पढ़कर, शंका समाधान आदि के द्वारा होता है। यह भी एक प्रकार से विद्वानों व ज्ञानियों की सेवा ही होता है। हम उनकी सेवा करेंगे, उन्हें आदर व सम्मान देंगे, उनके आश्रमों व निवासों पर समित्पाणि होकर जायेंगे तभी उनसे ज्ञान मिलना सम्भव है। हमने स्वयं भी संगतिकरण से लाभ उठाया है। सत्संगों में जाने और विद्वानों के उपदेश सुनने में हमारी प्रवषत्ति रही है। जिस विद्वान ने जिस ग्रन्थ पर आधारित प्रवचन किया या अपने उपदेश में जिस शास्त्र या ग्रन्थ विशेष का उल्लेख किया, हमने उस ग्रन्थ को प्राप्त कर उसे पढ़ा जिससे हमें उस ग्रन्थ की विषय–वस्तु व उसके विस्तार व उसमें निहित व उद्घोषित तथ्यों का ज्ञान हो गया। इस प्रकार स्वाध्याय करते–करते हमारी आज की स्थिति आ गई और हम विगत 25 वर्षों से महापुरूषों के जीवनों व आध्यात्मिक विषयों पर लेख आदि लिख लेते हैं। स्वाध्याय का हमारा व्रत चल रहा है। **स्वाध्याय भी एक प्रकार से ग्रन्थ व पुस्तक के लेखक के साथ संगति ही होता है। ग्रन्थ को पढ़कर लेखक के प्रति हमारे अन्दर जो आदर के भाव उत्पन्न होते हैं उससे उस विद्वान की अप्रत्यक्ष रूप से सेवा हो जाती है।** यदि स्वाध्याय की प्रवषत्त न हो तो किसी लेखक द्वारा लिखी गई पुस्तक अनावश्यक सिद्ध हो जाती है और उसने अपने जीवन के अनुभव से पुस्तक के विषय में जो ज्ञान व अनुभव प्रस्तुत किये हैं, उससे भावी पीढ़ी लाभान्वित नही हो पाती। अतः जीवित विद्वानों का प्रत्यक्ष रूप से संगतिकरण कर उनकी मौखिक व दान आदि से सेवा करना तथा दिवंगत विद्वानों के ग्रन्थों को पढ़ना भी एक प्रकार से सेवा का उदाहरण होने के साथ जीवन में अनेकशः लाभ प्रदान करता है।

हम एक छोटा सा सेवा व सहायता का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे थे। एक बार वैदिक धर्म के विश्व विख्यात प्रचारक महर्षि दयानन्द किसी स्थान पर विराजमान थे। उन्होंने देखा कि सामने सड़क पर एक झोटा गाड़ी सामान से लदी हुई चढ़ाई पर जा रही है। भार अधिक होने के कारण झोटा प्रयास कर भी आगे नहीं बढ़ पा रहा है। उसका मालिक सोटे से बार–बार उसे पीट रहा है परन्तु वह झोटा प्रयत्न करने पर भी आगे बढ़ने में असमर्थ है। दयावान महर्षि दयानन्द अपने स्थान से उठे और उस गाड़ी के पीछे जाकर उसे आगे बढ़ाने में अपने बल का सहयोग किया जिससे वह गाड़ी आसानी से चढ़ाई पार कर गई। ऐसा करने पर गाड़ी का मालिक बहुत ही कष्तज्ञता अनुभव कर हाथ जोड़कर दयानन्द जी का धन्यवाद कर रहा था तो उन्होंने कहा कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। यह तो उनका कर्तव्य व धर्म था। यह उदाहरण यद्यपि छोटा है परन्तु इससे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। ऐसे उदाहरण हमें यदा–कदा देखने को मिलते रहते हैं। यदि हम इसे अपनी प्रवषत्ति में सम्मिलित कर लें तो इससे समाज में एक अच्छा संदेश जा सकता है और एक अच्छी परम्परा को स्थापित किया जा सकता है। यहां हम यह भी जोड़ना चाहते हैं कि ईश्वर के गुणों का अध्ययन करने पर हमें उसमें दया और करूणा का गुण भी ज्ञात होता है। यदि माता–पिता के समान हमारे जन्मदाता परमात्मा में दया और करूणा का गुण है तो हमारे अन्दर भी यह गुण अवश्य ही विद्यमान होना चाहिये। यदि हम ऐसा नहीं करते तो हम ईश्वर को अप्रसन्न करते हैं और इससे हमारी ही हानि होती है।

हमारा वेदों के विद्वान और देश के विभिन्न भागों में 9 आर्ष गुरूकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती से निकट सम्पर्क है। कुछ वर्ष पूर्व स्वामीजी इतने रोगी हो गये कि उन्हें लगभग 6 माह से अधिक शय्या पर ही रहना पड़ा। कैंसर जैसा भयानक रोग उन्हें बताया गया। उनकी चिकित्सा चलती रही और वह स्वस्थ हो गये। इसके अतिरिक्त भी उन्हें अनेक बार अनेक प्रकार की शारीरिक व्याधि

(शेष पृष्ठ ५ पर)

thearyasamaj.org

नए वर्ष 2015 का स्वागत 'सत्यं वद धर्म्म चर' का शाश्वत् संकल्प लेकर करें''

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आज नए आंग्ल वर्ष 2015 का शुभारम्भ हुआ है। सारा देश और संसार नए वर्ष को अपनी पूरी प्रसन्नता, उत्साह, उल्लास व जोश से मना रहा है। यह अवसर जीवन में कुछ सार्थक व्रत या संकल्प लेने का भी है। व्रत व संकल्प धारण करने से पूर्व यह विचार करना भी आवश्यक है कि हम जो व्रत या संकल्प लें, उससे हमारा वर्तमान जीवन और भविष्य, न केवल इस जीवन अपितु मृत्यु के बाद अर्थात् इहलोक और परलोक दोनों, सुधर सकें। क्या ऐसा कोई व्रत, संकल्प या कार्य हो सकता है जिससे यह उपलब्धि ा प्राप्त हो सकती है? इसका उत्तर हां में हैं। वह व्रत व संकल्प है कि हम आज के दिन जीवन मे सदैव ''सत्यं वद धर्म्म चर'' का व्रत लें। इन दोनों गुणों को यदि हमने अपने जीवन में धारण कर लिया तो यह घाटे का नहीं वरन् अपने निजी जीवन के लिए बहुत लाभ का सौदा सिद्ध हो सकता है। यह लाभ का सौदा कैसे सिद्ध होगा, इस पर कुछ विचार कर लेना समीचीन है।

पहला विचार तो हम यह करें कि हम यह जानें कि हमें यह जीवन किससे व क्यों मिला है? इसका विवेचित उत्तर है कि यह जन्म हमें ईश्वर से अपने प्रारब्ध का भोग करने व नये शुभ कर्म जिन्हें धर्माचरण का नाम दे सकते हैं, के लिए परमात्मा से उपहार स्वरूप मिला है। परमात्मा की एक स्वतन्त्र अनादि, अनन्त, नित्य, सनातन, अजन्मा, अजर, अमर, अविनाशी सत्ता है। यह परमात्मा सत्य, चित्त व आनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वातिसूक्ष्म, सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी, दयालु, सर्वाधार, सर्वेश्वर, पवित्र व सृष्टिकर्त्ता है। हम जीव वा जीवात्मा है जिसका स्वरूप चेतन, ज्ञानपूर्वक कर्मों का कर्त्ता, एकदेशी व अतिसूक्ष्म, दृष्टि से अगोचर, ससीम, अनादि, अजन्मा, अमर, नित्य, सनातन, शुद्ध व बुद्ध तथा जन्म–मरणधर्मा स्वरूप वाला है। जीव अर्थात् हम अपने ज्ञान, प्रयोजन, स्वार्थ, माया–मोह, ईर्ष्या–द्वेष आदि में फंस कर शुभ व अशुभ कर्म करते हैं जिससे हम कर्म बन्धनों में फंस जाते हैं। यह कुछ ऐसा ही है जैसे कोई चोर अपने स्वार्थ के लिए कहीं चोरी करे और पुलिस द्वारा बन्दी बन कर जेल के भीतर पहुंच जाये। ईश्वर सर्वान्तरयामी होने से हमारे प्रत्येक अच्छे व बुरे कर्म को जानता है, अतः उसे हमारे कर्मों के फल देने में कहीं किंचित भी कठिनाई नहीं है। हम अपनी अज्ञानता से इस तथ्य व रहस्य को भूले हुए होते हैं। शुभ कर्मों का फल सुख व अशुभ कर्म जिन्हें पाप भी कहा जाता है, दुःख के रूप में अवश्यमेव भोगना पड़ता है। ''सत्य वद धर्म चर'' का व्रत लेकर हम असत्य अर्थात् अशुभ कर्मों से बच सकते हैं। असत् कर्मों के त्याग व सत्कर्मों के आचरण से हमारे दुःखों की निवृति हो जायेगी और हम केवल सुख ही सुख प्राप्त होंगे। सत्य वद् के साथ जो धर्म चर है उसका अर्थ भी सत्य का आचरण ही है। सत्य एवं धर्म शब्द एक प्रकार से एक दूसरे का पर्याय है। धर्म शब्द में सत्य शब्द भी एक प्रकार से निहित है। धर्म का अर्थ होता है श्रेष्ठ मानवीय गुणों को मनुष्य जीवन में धारण करना। यह ऐसा ही है जिस प्रकार से अग्नि ने ताप व प्रकाश को धारण किया है और जल ने शीतलता को धारण किया हुआ है। अग्नि व जल अपने इन गुणों का किन्हीं भी परिस्थितियों में त्याग नहीं करते। ऐसा ही हम मनुष्यों के लिए भी करणीय है।

मनुष्यों को धारण करने योग्य श्रेष्ठ मानवीय प्रमुख गुण कौन–कौन से हैं तो इसका उत्तर है कि स्वार्थ त्याग कर दूसरे प्राणियों को सुख पहुंचाने के लिए जो कर्म किए जाते हैं उन्हें धर्म कह सकते हैं। अपने शरीर की रक्षा व इसकी उन्नति मनुष्य का पहला धर्म है। सामाजिक उन्नति भी मनुष्य धर्म के अन्तर्गत आती है। इसके साथ अपनी आत्मा की उन्नति भी मनुष्य का धर्म है। यह आत्मा की उन्नति व अन्य सभी उन्नतियां सत्य को धारण करने से होती हैं। सत्य के धारण में ईश्वर के सत्यस्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना और उसके अनुरूप आचरण अर्थात् ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना मनुष्य

thearyasamaj.org

का धर्म है। इसलिए कि ईश्वर ने हमारे लिए यह संसार बनाया, सुख के पदार्थ बनाकर हमें निःशुल्क प्रदान किये हैं, हमारा शरीर व इसमें सुखकारी इन्द्रिय आदि बनाकर हमें प्रदान की हैं, हमें माता–पिता–आचार्य–विद्वान, बन्धु, मित्र व कुटुम्बी जन आदि प्रदान किये हैं। संस्कृत भाषा व सत्य ज्ञान वेद दिया है। हमें जीवन की उन्नति के अवसर देने के साथ दुःखों की पूर्णतया निवृति के उपाय वेद में बतायें हैं। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करना कृतज्ञता का प्रकाश करना है और न करना कृतघ्न या महापापी होना है इसी प्रकार से वायु शुद्धि, निरोग व स्वस्थ जीवन तथा अन्य प्राणियों के पोषण के लिए यज्ञ करना भी युक्ति व तर्क सिद्ध है। इसके साथ माता–पिता–आचार्य व विद्वानों की सेवा व संगतिकरण करना भी हम सब मनुष्यों का धर्म सिद्ध होता है। सभी प्राणियों की रक्षा व पालन भी प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य–धर्म है। विद्वान अतिथियों की सेवा करने से हमारा अज्ञान व शंकायें दूर होती है, अतः ऐसे अतिथियों का सत्कार करना भी धर्म है। इस प्रकार से धर्म को जानकर हम ''धर्म चर'' का साक्षात उदाहरण बन कर जीवन को सफल कर सकते हैं।

अपनी बात समाप्त करते हुए हम यह कहना चाहते हैं कि एक दिन हम सभी की मष्त्यु होनी निश्चित है। अतः हमें ऐसे कार्य करने चाहिये जिससे हमारा सारा जीवन सुखी हो और मष्त्यु के बाद अविनाशी और अमर आत्मा का कल्याण हो। यह ''सत्यंवद धर्मचर'' से निश्चित रूप से होता है। हमें मष्त्यु के क्षणों में पछताना नहीं होगा अपितु हम प्रसन्नता से मष्त्यु का वरण कर सकेगें। सरल शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि सत्य को जानना, स्वयं मानना, दूसरों को जनाना व मनवाना भी मनुष्य धर्म के अन्तर्गत आता है। सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा सबको उद्यत रहना चाहिये। मनुष्य को अपने सभी कार्य सत्य व असत्य का विचार करके करने चाहिये। सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये, अविद्या का नाश तथा विद्या की वष्द्धि करनी चाहिये, हमें केवल अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये। महर्षि दयानन्द एवं अन्य कुछ महापुरूषों से हम इस प्रकार की शिक्षा ले सकते हैं। यह सभी बाते 'धर्म–चर' के अन्तर्गत आती हैं। गीता में जीवन को 'धर्मक्षेत्रे कुरूक्षेत्रे' कहा गया है। यह हमारा जीवन धर्म करने का क्षेत्र और कर्म करने का क्षेत्र अर्थात् स्थान' है। यहां हमें धर्म और ध र्मानुसार सभी कर्म करने हैं। इसी से हमारा जीवन सार्थक होगा। इसी के साथ, नये वर्ष की सभी पाठकों को बधाई देते हुए लेखनी और लेख को विराम देते है।

''भरोसा कर तू ईश्वर पर तुझे धोखा नहीं होगा।
यह जीवन बीत जायेगा तुझे रोना नहीं होगा।।''

पताः 196 चुक्खूवाला–2 देहरादून–248001

(पृष्ठ ३ का शेष)

ायों ने आक्रान्त किया परन्तु वह स्वस्थ होते गये। हमने एक बार उनसे पूछा कि स्वामीजी आप अनेक रोगों से अनेक बार त्रस्त रहे और असाध्य रोग पर भी आपने विजय प्राप्त की, इसका मुख्य श्रेय आप किस बात को देते हैं तो उन्होंने कहा कि मैंने जीवन में वृद्धों व विद्वानों की यथासम्भव सेवा की है। मेरा बार–बार रोगाक्रान्त होकर पुनः स्वस्थ हो जाना, मैं उनके आशीर्वाद का परिणाम मानता हूं। हमें लगता है कि उनकी यह बात सर्वथा सत्य है। सेवा करने पर हमें जो शुभकामनायें व आशीर्वाद मिलता है उससे हमें जीवन में आयु, विद्या, यश व बल की प्राप्ति होती है, ऐसा मनुस्मृति में वर्णित है और इस ग्रन्थ के यह विचार व विधान सत्य सिद्ध हैं तथा स्वामीजी का जीवन इसका प्रमाण है।

सेवा में अनेक रूप हो सकते हैं। किसी रोगी की सेवा करना भी सेवा के ही अन्तर्गत आता है। रोगी की सेवा उसके लिए अच्छा भोजन, वस्त्र, ओषधि यां व चिकित्सा की सुविधा प्रदान कर की जा सकती है। आज कल चिकित्सा के क्षेत्र में अनाचार चरम पर सुना जाता है। हम भी अपने जीवन में यदा–कदा इसका अनुभव करते रहते हैं। चिकित्सों को तो ईश्वर के बाद दूसरा स्थान प्राप्त है। रोगियों के प्रति उनकी सद्भावना होनी चाहिये न कि

(शेष पृष्ठ ७ पर)

thearyasamaj.org

नव वर्श 2015 नये शुभ संकल्पों को लेने का दिवस'

नया वर्श 2015 एक दिन बाद, कल से आरम्भ हो रहा है। नव वर्ष के प्रथम दिवस के अवसर पर हम जहां अपने मित्रों, परिवारजनों और परिचितों को नये वर्श की षुभकामनायें दें वहां हम समझते हैं कि हमें कोई नया संकल्प भी लेना चाहिये। ऐसा एक संकल्प हम आगामी पंक्तियों में प्रस्तुत कर रहें हैं। कष्पया स्वयं विचार कर देखें कि क्या यह हमारे लिए उचित व आवश्यक नहीं है? बन्धुओं, मनुश्य जीवन परमात्मा की हमें अनमोल देन है। यह ऐसी देन है जो परमात्मा के अलावा कोई किसी को दे नहीं सकता। हमने अपने अध्ययन व चिन्तन से जाना कि हम अपने शरीर में एक चेतन जीवात्मा हैं और परमात्मा ने हमें यह मानव शरीर किसी विशेश प्रयोजन को पूरा करने के लिए दिया है। वह प्रयोजन क्या है? विचार करने पर हमें पता लगता है कि हमारी आत्मा अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, एकदेशी, आनन्द व सुख से रहित, सुख व आनन्द प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील, जन्म व मष्त्यु के बन्धन में बंधी हुई, अजर, अमर व अविनाशी है। ईश्वर ने हमें माता–पिता दिये और हमें उत्पन्न किया। जन्म लेने से पूर्व हम शरीररहित एक चेतन जीवात्मा थे और इस जन्म की भांति नाना जीव योनियों मे जीवन व्यतीत कर रहे थे। वहां की अवधि पूरी कर अपने कर्मानुसार फल भोगने और जीवन से मुक्ति या मोक्ष को प्राप्त करने के लिए इस मनुश्य योनि में आयें हैं। हमें उत्पन्न करने वाला ईश्वर सत्य, स्वतन्त्र चेतनतत्व, आनन्द स्वरूप, सर्वज्ञ, अजन्मा, अनुत्पन्न, नित्य, अविनाशी, अजर, अमर, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सषश्टिकर्ता है। ईश्वर ने सूर्य, चन्द्र, पषथिवी व इस ब्रह्माण्ड को एक जड़ तत्व प्रकषति से बनाया है जो अति सूक्ष्म, नित्य व अनादि, सत्व–रज–तम गुणों वाली, जड़ पदार्थ व परिमाण में अनन्त है। अतः ईश्वर द्वारा दिये गये ज्ञान "वेद" के आधार पर सषश्टि के आरम्भ में ही हमारे प्राचीन ऋशियों ने प्रत्येक मनुश्य वा स्त्री–पुरूश के पांच दैनिक कर्तव्य निर्धारित किये थे। वह कर्तव्य हैं, ईश्वर का ध्यान करना जिसे सन्ध्या कहते हैं। दूसरा देवयज्ञ, अग्निहोत्र या हवन है। तीसरा पितष यज्ञ है जिसमें माता–पिता–परिवार व समाज के बड़ों व वष्द्धों की श्रद्धापूर्वक सेवा करनी होती है, चौथा कर्तव्य अतिथि यज्ञ अर्थात् समाज व देश के विद्वानों, आचार्यो, ज्ञानियों, समाज हितैशियों, देशभक्तों आदि की श्रद्धा के साथ सेवा, सहायता, सहयोग व उनके प्रति श्रद्धा की भावना रखनी होती है। पांचवां व अन्तिम कर्तव्य है बलिवैश्वदेव यज्ञ। यह यज्ञ प्राणी मात्र के प्रति मित्रता की भावना रखते हुए उनके जीवनयापन में सहयोग करना व अपना जीवन शतप्रतिशत अंहिसापूर्वक व्यतीत करना। केवल शाकाहारी, शुद्ध व पवित्र भोजन ही करना। इन पांच कर्तव्यों के निर्वाह करने से व्यक्तिगत, सामाजिक, स्वदेश व वैश्विक उन्नति के अनेक प्रयोजन सिद्ध होते हैं और साथ–साथ हम कष्तघ्न नहीं होते। आईये, इन पांच नित्य व दैनिक कर्तव्यों पर संक्षेप मे और विचार करते हैं।

पहले दैनिक कर्तव्य के अन्तर्गत ईश्वर का ध्यान हमें इस लिए करना है कि उसने हमारे लिए यह संसार बनाया, हमें जन्म दिया, माता–पिता–परिवार, समाज व देश सब उसी की देन है। वह बहुत बड़ा ज्ञानी, सर्वशक्तिमान, हमारा रक्षक, जन्म–जन्मान्तर का मित्र, बन्धु व सखा है। उसे जानना, उसका ध्यान करते हुए उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना हमारा कर्तव्य है अन्यथा हम कृतघ्न बनते हैं। कृतघ्नता सबसे बड़ा पाप व अनुचित कर्म है। संसार में ईश्वर सबसे बड़ा, परम दानी, परम ऐश्वर्यशाली है। उसकी स्तुति से निराभिमानता अर्थात् अहंकार का नाश होगा। उसके गुणों में प्रीति होने से उससे निकटता व मित्रता होगी और हमारे दुश्ट विचार व दुर्गुण दूर होगें तथा उपासना से उसकी निकटता व साक्षात्कार होता है। ईश्वर का प्रत्यक्ष इस तथ्य से भी होता है कि जब हम कोई बुरा काम करते हैं या करने का विचार करते हैं तो हमारी आत्मा में भय, शंका व लज्जा पैदा होती है। और जब कोई अच्छा काम या उसे करने का विचार करते हैं तो प्रसन्नता, उत्साह, निडरता व निर्भयता आती है। आत्मा में यह आनन्द, उत्साह व भय, ईश्वर द्वारा उत्पन्न किया जाता है और सबके साथ ही ऐसा होता है। यह ईश्वर के हमारी आत्मा में विद्यमान होने व उसके अस्तित्व का प्रत्यक्ष प्रमाण है। हम आंखों से ईश्वर को इस कारण नहीं देख पाते हैं कि वह अणु, परमाणु, आकाश, वायु, गन्ध व अनेक अस्तित्ववान सूक्ष्म पदार्थो से भी सूक्ष्म वा सर्वातिसूक्ष्म है। अतः हमारा पहला नित्य दैनिक कर्तव्य ईश्वर का ध्यान करना

thearyasamaj.org

व उसके उपकारों के लिए प्रातः व सायं लगभग एक घटें तक उसके स्वरूप व उपकारों का ध्यान करते हुए उसका धन्यवाद करना है।

दूसरा कर्तव्य दैनिक अग्निहोत्र या देव यज्ञ है। यह भी प्रातः व सायं करना होता है। इसमें शुद्ध गाय का घृत, आयुर्वेदिक ओशधियों व वनस्पतियों, गुड़, शक्कर आदि मिश्ट पदार्थो व सूखे फलों, मेवों आदि की वेद–मन्त्रोच्चार पूर्वक यज्ञ कुण्ड की अग्नि में आहुतियां दी जाती है। इसके करने से हमारे प्राणवायु–श्वांस को छोड़ने, रसोई में भोजन पकाने, कपड़े धोने, भूमि पर चलने आदि से जो वायु, जल प्रदुशण एवं कीट–पतंगों व सूक्ष्म जीवों की हत्या वा मृत्यु होती है, उसका समाधान होता है अन्यथा ईश्वर के विधान से जन्म–जन्मान्तरों में उन कर्मों के फलों के भोगने से हमारा जीवन दुःख पूर्ण होता है, ऐसा कर्म–फल सिद्धान्त से विदित होता है। तीसरा पितृ यज्ञ में माता, पिता, आचार्य, ज्ञानी, वृद्धों के प्रति आदर रखते हुए उनकी भोजन, वस्त्र व अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने हुए श्रद्धापूर्वक सेवा करनी होती है। इससे हमें उनका आशीर्वाद व शुभकामनायें प्राप्त होती हैं। हमारा जीवन सुख व चैन से शान्तिपूर्वक व्यतीत होता है। चौथा कर्तव्य अतिथि यज्ञ है जिसमें हमें विद्वानों, गुणियों, ज्ञानियों–विज्ञानियों, अनुभवियों, समाज को उन्नत बनाने वाले उपदेशक व विद्वानों आदि की धन के दान, भोजन आदि कार्यो से सेवा करनी होती है जिससे वह लोग हमारे सम्पर्क में आते रहें और अपने ज्ञान व अनुभवों से हमारा मार्ग दर्शन करते रहें। इससे देश व समाज सबल व उन्नत होता है। आज ऐसी भावना समाप्त प्रायः है जिसे पुनर्जीवित करना है। पांचवा कर्तव्य बलिवैश्वदेव यज्ञ है जिसमें पशु, पक्षियों व प्राणीमात्र के प्रति मित्र की भावना रखते हुए उनके भोजन आदि से सत्कार करना होता है। इसका कारण यह है कि हमारा जीवन अनादि व नित्य होने से असंख्य–असंख्य बार सभी योनियों में आता जाता रहा है और आगे भी ऐसा ही होगा। अतः यह सभी जीवात्मा अेकानेक जन्मों में हमारे पारिवारिक जन, मित्र व सहयोगी रहे हैं और आगे भी रहेगें। हमारा पुनर्जन्म अवश्य होगा और वह किसी भी जीव योनि में हो सकता है। उन सभी जीव–योनियों में हमें सुख की प्राप्ति हो इसके लिए इसी योनि में हमें तैयारी करनी है और उसी के लिए यह पांचवा कर्तव्य है। उपर्युक्त पांच कर्तव्यों को पूरा करने के लिए महर्शि दयानन्द सरस्वती ने ''पंचमहायज्ञ विधि नाम से एक पुस्तक लिखी है। जो पठनीय, उपयोगी व आचरण में सहयोगी है। हम समझते हैं आज आंग्ल नूतन वर्श 2015 को मनाते हुए उपर्युक्त दैनिक पंचमहायज्ञों को करने का संकल्प लेकर भी इस दिन को मना सकते हैं। सबसे बड़ा व्रत है सत्य बोलना और धर्म पर आरूढ़ रहना। इससे जीवन में अभ्युदय व निःश्रेयस की प्राप्ति होती है। यही मनुष्य जीवन का लक्ष्य भी है। आईये, पंचमहायज्ञ करने और ''सत्य वद, धर्म चर'' का व्रत लेकर नववर्ष मनायें। नववर्श के अवसर पर पाठकों के विचारार्थ कुछ पंक्तियां लिखी है। आंग्ल वर्श 2015 के अवसर पर हमारी आप सबको हार्दिक शुभकामनायें। नया वर्श व भावी जीवन सब बन्धुओ के लिए सुख–समृद्धि व सफलताओं से पूर्ण हों, यह ईश्वर से कामना है

(पृष्ठ ५ का शेष)

येन केन प्रकारेण उनसे अधिकाधिक धन कमाने की प्रवषत्ति। परन्तु स्वार्थ की प्रवषत्ति का आजकल सभी वर्गों में अमर्यादित रूप से विस्तार हो रहा है जिससे समाज में सर्वत्र चिन्ता व दुःख अनुभव किया जा रहा है। इसका भविष्य में क्या परिणाम होगा, इसका अनुमान लगाना कठिन है। हमें लगता है कि ऐसा वैदिक शिक्षा से दूर जाने के कारण हुआ है। जब तक बच्चों को आरम्भ से वेद व उपनिषद के अनुसार आध्यात्मिक विज्ञान की शिक्षा नहीं दी जायेगी, निःस्वार्थ जीवन व्यतीत करने वाले सत्पुरूष समाज में उत्पन्न नही किये जा सकते। अपवाद तो हो सकते हैं परन्तु शुभ गुणों से युक्त मनुष्य का निर्माण वैदिक आध्यात्मिक शिक्षा व संस्कारों से होना ही सम्भव है। हम समझते हैं कि जीवन को सफल करने के लिए हमें आपने चारों ओर के वातावरण में सबको स्वस्थ, शिक्षित व सम्पन्न बनाने का प्रयास व ऐसी सद्भावनाओं को अपने हष्दय में स्थान देना होगा, साथ हि इसके लिए मन, वचन व कर्म से प्रयास व सहयोग करना होगा, तभी हम मनुष्य जीवन को सार्थक कर सकेंगे। वैभव पूर्ण जीवन जीना ही प्रशस्त जीवन नहीं है अपितु दूसरों के दुःखों का निवारण करना और सबकी प्रसन्नता में प्रसन्न होना ही वास्तविक मनुष्य जीवन है।

thearyasamaj.org

भाजपा का 'मिशन 44' दिवास्वप्न

सामयिक

प्रभात कुमार रॉय

जब प्रधानमंत्री घाटी में आर्थिक विकास के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं, तो वहां उनके प्रति भरोसे की दुविधा नजर आती है। लोग सवाल करते हैं, मोदी जो कहते हैं, क्या उसे वास्तव में पूरा करेंगे या लुभाने के लिए चतुराई भरी तकरीरें ही कर रहे हैं?

जम्मू कश्मीर में विधानसभा की 18 सीटों के लिए चौथे चरण का चुनाव 14 दिसंबर को समाप्त हो गया और पहले के तीन चरण के चुनाव की तर्ज पर ही चौथे चरण के चुनाव में भी विस्मयकारी तौर पर जम्मू कश्मीर के मतदाताओं द्वारा जबरदस्त तौर पर वोट डाले गए। वस्तुतः 2014 भाजपा की चुनावी फतह का वर्ष रहा। महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनाव में भी जीत का परचम लहरा दिया। झारखंड में भी विजय द्वार पर अपनी दस्तक दे दी। जब जम्मू का इलाका पार करने के बाद अर्थात बनिहाल दर्रा पार करके हम डल झील के साहिल पर पहुंचते हैं, तब ऐसा कुछ प्रतीत होता है कि यहां पर कमल का करिश्मा कम हो गया है। मोदी-शाह की जोड़ी ने जम्मू-कश्मीर में 'मिशन 44' के लिए अपना पूरा दमखम लगा दिया है, किंतु 44 सीटों की उम्मीद रखना, दिवास्वप्न ही करार दिया जाएगा। इस यथार्थ के बावजूद जम्मू-कश्मीर में भाजपा ने जैसा चुनाव लड़ा है, वह भाजपा की महत्वाकांक्षा की तसदीक करता है। भाजपा कश्मीर घाटी में कभी एक सीट भी नहीं जीत सकी है। जम्मू कश्मीर में भाजपा ने सबसे शानदार प्रदर्शन 2008 में किया था, जब उसने अमरनाथ भूमि आंदोलन की लहर पर सवार होकर 11 सीटें जीती थीं। 2014 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने समस्त परिदृश्य में अपनी जबरदस्त उपस्थिति दर्ज करा दी है।

भाजपा ने कश्मीर घाटी में कुछ ऐसे प्रभावशाली प्रत्याशी चुनाव में उतारे हैं, जिनके मध्य प्रथम अवसर पर बड़ी संख्या में स्थानीय मुसलिम भी शामिल हैं। भाजपा प्रत्याशियों की कतारों में डाक्टर्स, रिटायर्ड ब्यूरोक्रेट्स और हथियार डाल चुके साबिक जेहादी शुमार हैं। उसने विज्ञापनों द्वारा मतदाताओं का ध्यान आकृष्ट करने में स्थानीय दलों से कड़ा मुकाबला किया है। राम माधव सरीखे अनेक वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने घाटी के चुनाव अभियान में काफी वक्त दिया। फिल्म एक्टर अनुपम खेर सरीखे लोकप्रिय व्यक्ति के माध्यम से भाजपा ने मतदाताओं को रिझाने का प्रयास किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रीनगर में प्रभावशाली जनसभा को संबोधित किया। इस सबके बावजूद घाटी में परिभ्रमण करने के बाद गहन एहसास उभरता है कि भाजपा कश्मीर घाटी में कोई निर्णायक दखल अंजाम दे पाएगी?

वस्तुतः कश्मीर घाटी में वस्तुतः भाजपा अपने ही इतिहास से जूझ रही है। वहां भाजपा और इसकी पूर्ववर्ती पार्टी जनसंघ का इतिहास इस गहन यकीन के इर्द-गिर्द निर्मित हुआ है कि जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जे का हक नहीं है और संविधान का आर्टिकल 370 पृथकतावाद को बढ़ावा देता है। कश्मीर की पृथक पहचान को खत्म करके इसे भारतीय राष्ट्रीयता में बाकायदा शामिल किया जाना चाहिए। संघ परिवार की राष्ट्रवादी सोच-समझ में आज का कश्मीर पूर्णतः फिट नहीं हो पाता है। कश्मीर घाटी एक ऐसा मुसलिम बहुल इलाका रहा है, जो मुकम्मल आजादी न भी चाहे, किंतु किसी हद तक प्रांतीय स्वायत्तता तो चाहता ही है। कश्मीरियों का यह नजरिया भाजपा को अस्वीकार्य है। श्रीनगर में नरेंद्र मोदी अनुच्छेद 370 पर खामोश रहे। इस विवादित मुद्दे का उल्लेख नहीं करके उन्होंने राजनीतिक व्यावहारिकता प्रकट की है। किंतु इसके विपरीत प्रधानमंत्री पर मौकापरस्ती का इल्जाम आयद किया जा

thearyasamaj.org

सकता है। भाजपा टिकट पर उधमपुर से निर्वाचित हुए केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने अपने चुनाव अभियान में कश्मीर का विशेष दर्जा खत्म करने की पुरजोर पैरवी की। भाजपा का चुनाव अभियान अनेक अंतरद्वंद्वों से परिपूर्ण रहा। जब नरेंद्र मोदी ने अपनी तकरीरों में कहा कि अटलबिहारी वाजपेई का नजरिया था कि कश्मीर मुद्दे का 'इंसानियत' के आधार पर समाधान होना चाहिए, तब कश्मीरी श्रोताओं ने उनके प्रति गर्मजोशी प्रकट की। कश्मीर घाटी ने अटल बिहारी वाजपेई का ऐसे प्रधानमंत्री के तौर पर दीदार किया था, जो कश्मीर के मुसलमानों तक अपनी पैठ बनाने की खातिर नए कदम उठाने के लिए तत्पर था। इसके विपरीत नरेंद्र मोदी को हंदुत्व के पैरोकार के तौर पर ही देखा और समझा जाता है।

जब प्रधानमंत्री कश्मीर घाटी में आर्थिक विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं, तो कश्मीर की वादियों में उनके प्रति भरोसे की दुविधा नजर आती है। कश्मीर के अनेक लोग सवाल करते हैं, मोदी जो कहते हैं, क्या वह उसे वास्तव में अंजाम भी देंगे अथवा केवल रिझाने लुभाने के लिए चतुराई भरी तकरीरें ही कर रहे हैं? यकीनन कश्मीर का नौजवान अब दहशतगर्दी से मुक्त होना चाहता है। कश्मीर की वादियों में युवा पीढ़ी से चर्चा करते हुए मुझे प्रतीत हुआ कि बंदूक के साये में ढाई दशक के अभिशप्त अंधकार से वह आजिज आ चुकी है। कश्मीर विधानसभा चुनाव में रिकॉर्ड तोड़ मतदान यही कह कर रहा है कि कश्मीर का जनमानस अतीत को पूर्णतः अलविदा कहकर, नए विकासशील मुस्तकबिल से अपना नाता स्थापित करना चाहता है। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्लाह के नेक इरादे रहे, किंतु छह साल तक उनकी हुकूमत की निकम्मी कारकर्दगी के कारण मतदाताओं के मन में बहुत गुस्सा रहा। चुनाव विवेचकों का अंदाजा है कश्मीर घाटी में पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी चुनाव दौड़ में सबसे अव्वल है। कश्मीर घाटी में नवीन राजनीतिक शक्ति के लिए समुचित स्थान है, लेकिन अपने अतीत के विकट बोझ के कारण भाजपा इस शून्य को कदापि नहीं भर सकती।

भाजपा नेतृत्व को घाटी को तहस-नहस कर देने वाली बाढ़ को भी गंवा दिए गए अवसर के रूप में देखना चाहिए। बाढ़ राहत के नाम पर केंद्रीय हुकूमत का पैकेज बहुत कम रहा है। पूर्णतः ध्वस्त हो चुके मकान के लिए 75,000 रुपये और आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त मकान के लिए 12,500 रुपये। इसको समुचित तौर पर जख्मों पर मरहम लगाने की कवायद भी करार नहीं दिया जा सकता। बाढ़ पीड़ित गुस्से में सवाल करते हैं, 'केंद्रीय सरकार के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण क्या है? कश्मीर में चुनाव कराना अथवा कश्मीरियों को फिर से बसाना?' नरेंद्र मोदी ने घाटी में दिवाली बिताकर बहुत अच्छा काम किया था, लेकिन संकटग्रस्त जम्मू-कश्मीर के लिए अल्फाजों में व्यक्त सहानुभूति और प्रतीकात्मकता से आगे जाना चाहिए। कुल मिलाकर जम्मू कश्मीर विधानसभा से कांग्रेस का संपूर्ण सफाया हो सकता है। नेशनल कांफ्रेस की कश्ती भंवर में फंसी है और पूरी तरह डूब भी सकती है। जम्मू में भाजपा और घाटी में पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी का वर्चस्व होगा। संभवतया भाजपा पहली बार जम्मू कश्मीर सरकार की तशकील में कोई भूमिका निभा सकती है।

హృదయాంజలి

ఎన్. ఆర్. తపస్వి

లోహియా! లోహియా!
ధర్మవాది లోహియా!
నవభారత రాజకీయ
మర్మవేది లోహియా!

అక్రమాల తునిమేవ
జ్రాయుధమే లోహియా!
అన్యాయం పాలిట సిం
హస్వప్నం లోహియా!

కులతత్వం, మతమౌఢ్యం
కులతలకే నెలవులని
మానవతా మకుటంతో
మనుజులెల్ల మెలగాలని
ప్రపంచమొక గ్రామంగా
పరిణామం చెందాలని
ప్రజలంతా సోదరులై
ప్రగతి యాత్ర సాగాలని

మహిళ కంటె పురుషుడెపుడు
మహనీయుడు కాబోడని
స్త్రీని కించపరచే దు
ర్నీతిని చెండాడాలని

నలుపైనా, తెలుపైనా
నరుని నల్ల ఎరుపేనని
పుట్టుకలో లేని అరలు
కట్టుకున్న చెరలేనని

దీనజనుల నాదరించ
బోని మనిషి పిశాచమని
ధన మదాంధులకు లోకం
తగిన శాస్తి జరపాలని

నినదించిన లోహియా!
రణధీరుడు లోహియా!
రాజకీయ వేత్తలలో
రసజ్ఞమణి లోహియా!

నల్ల - రక్తము

thearyasamaj.org

'स्वाध्याय से जीवनोद्‌देश्य का ज्ञान व इच्छित फलों की प्राप्ति'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

संस्कष्त का 'स्व' शब्द विश्व के भाषा साहित्य का एक गौरवपूर्ण व महिमाशाली शब्द है। इस शब्द में स्वयं को जानने व समझने की प्रेरणा छिपी है। जिसने ''स्व'' अथवा स्वयं को जान लिया वह जीवन में सफल हुआ कहा जा सकता है। जिसने 'स्व' को न जाकर अन्य सब कुछ भौतिक सुख समषद्धि को पा लिया, लगता है वह घाटे में रहा है। अतः इस महत्वपूर्ण शब्द को जानकर इस शब्द से जुड़े अध ययन जो स्वाध्याय कहलाता है, विचार करते हैं।

स्वाध्याय शब्द 'स्व' शब्द की तरह अति गरिमा एवं महिमापूर्ण शब्द है। इसमें स्वयं वा अपने आप का अध्ययन करने की प्रेरणा व सन्देश निहित है। यह एक प्रकार से 'मनुर्भव' का ही पूरक व पर्यायवाची शब्द लगता है। हम मनुर्भव अर्थात् मननशील कब बनेंगे कि जब हम स्वाध्याय कर यह जान पायेगें कि हम वस्तुतः व स्वरूपतः कौन हैं और हमारे जन्म व जीवन का उद्‌देश्य क्या है? यदि हम स्वयं को जान ही नहीं पाये तो मनुष्य बनना कठिन ही नहीं असम्भव है। स्वाध्याय से हमें स्वयं को जानने की प्रेरणा तो मिल गई, अब इस अनुष्ठान को अंजाम कैसे दिया जाये। इसके लिए हमें एक गुरू या मार्गदर्शक की आवश्यकता है जो हमें पहले वर्णमाला का उच्चारण करने और मातृभाषा को लिपि में लिखने व उसे समझने के योग्य शिक्षा दे। यह कार्य कुछ ही दिनों में आसानी से हो जाता है। साक्षर एवं भाषा को पढ़ने व लिखने की योग्यता आ जाने पर स्वाध्याय का रास्ता खुल जाता है और हम मनचाही व अपने गुरूओं, ज्ञानियों, योगियों व समाज के सज्जन विद्वान पुरूषों के बतायें हुए मार्ग को जान कर उसका अनुगमन कर सकते हैं।

स्वाध्याय एक ओर जहां ईश्वर व जीवात्मा से सम्बन्धित साहित्य को होता है वहीं अन्य अनेकानेक विषयों का भी हो सकता है। ईश्वर व आत्मा के क्षेत्र में भिन्न प्रकार के ग्रन्थ व मान्यतायें पढ़ने को मिलती हैं। इन्हें दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। एक ऐसी मान्यतायें जो वेद व सत्य से पुष्ट होती हैं और दूसरी जो वैदिक मान्यताओं से भिन्न हैं जिन्हें अज्ञान, पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि कहते हैं। इसमें अन्तर करना विवकेशील ज्ञानी पुरूषों के लिए ही सम्भव है। वैदिक मान्यतायें कौन सी हैं, तो यहां भी इसके भेद हो जाते है। एक तो वह हैं जो वेदों की हमारे ऋषि–मुनियों ने अपने ग्रन्थों उपनिषद व दर्शनों आदि में दी हैं और उन्नीसवीं शताब्दी में जिनका उल्लेख, वर्णन, विस्तार व समर्थन महर्षि दयानन्द ने वेद प्रमाणों, युक्तियों आदि से किया है। इसके लिए सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका सहित महर्षि दयानन्द के सभी ग्रन्थ व उनका वेद भाष्य एवं 11 उपनिषद तथा दर्शन ग्रन्थ आदि सम्मिलित हैं। पुराणों व अन्य मतों के ग्रन्थ पढ़ने से भ्रान्ति होने की पूरी–पूरी सम्भावना है क्योंकि इन सब ग्रन्थों में सत्य और असत्य मान्यताओं का मिश्रण हैं और अप्रमाणिक, काल्पनिक या असत्य कहानी–किस्से हैं। ईश्वर के बारे में यदि जानना है तो वह सत्य, चित्त, आनन्द स्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तिर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र व सृष्टिकर्त्ता सिद्ध होता है। इसी प्रकार से आत्मा एक अति सूक्ष्म तत्व, आंखों से न दिखने वाला, शरीर में विद्यमान होकर शारीरिक क्रियाओं द्वारा इसका प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, यह अनादि, अजन्मा, अविनाशी, अमर, नित्य, एकदेशी, अल्पज्ञ, कर्मो का कर्ता और भोक्ता, अपने संचित कर्मों व प्रारब्ध के अनुसार जन्म–मरण धारण करने वाला पदार्थ है। ईश्वर जीवात्माओं को

thearyasamaj.org

कर्मानुसार जन्म देता है और जीवों के लिए सृष्टि बनाता है और 4.32 अरब वर्षों की अवधि पूर्ण होने पर प्रलय करता है। जो जीव अच्छे कर्म करते हैं व वेदानुसार जीवन व्यतीत करते हैं उनके कर्मों का भोग पूरा हो जाने एवं योग समाधि से ईश्वर का साक्षात्कार कर लेने पर जन्म–मरण के चक्र से मुक्त होकर उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। वेद व वैदिक साहित्य के अतिरिक्त जिन अन्य प्रकार के साहित्य का मनुष्य अध्ययन करता हैं उन–उन विषयों का उसे ज्ञान होता है जिसका उपयोग कर उन विषयों के ज्ञान व कियाओं से होने वाले लाभों को वह प्राप्त कर सकता है। अतः सभी प्रकार के सत्य साहित्य का अध्ययन करना चाहिये। किसी भी साहित्य मुख्यतः ध ार्मिक साहित्य को आंख बन्द कर अन्धी श्रद्धा व अन्धी आस्था का दास बनकर नहीं पढ़ना चाहिये। सत्य की खोज करनी चाहिये और तर्क बुद्धि से सत्य व असत्य का निर्णय कर सत्य को स्वीकार और असत्य का तिरस्कार स्वयं भी करना चाहिये और दूसरों को भी समझा कर कराना चाहिये।

स्वाध्याय के बारे में हमारे शास्त्रकारों ने इसे नित्य कर्म में सम्मिलित किया गया है। स्वाध्याय का प्रमुख ग्रन्थ तो वेद और वैदिक साहित्य ही है। वेद विद्या के ग्रन्थ हैं। विद्या उसे कहते हैं जो बन्धनों से, जो दुःख और पुनर्जन्म का कारण होते हैं, मुक्ति दिलाती है। मुक्ति ज्ञान से होती है अतः विद्या का मुख्य प्रयोजन सभी विषयों का सत्य–सत्य ज्ञान होता है। प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक घंटा तो नियमित स्वाध्याय करना ही चाहिये। हमारा अनुमान है कि एक घंटे में व्यक्ति किसी ग्रन्थ के 15 पृष्ठ पूर्ण तल्लीन होकर पढ़ सकता है। इस प्रकार से एक वर्ष में 5,475 पृष्ठ पढ़े जा सकते हैं। इन पृष्ठों में हम सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, संस्कार विधि, पंचमहायज्ञ विधि, 11 उपनिषद् व 6 दर्शन पढ़ सकते हैं। इसके बाद एक वर्ष में इतने ही पृष्ठ और पढ़े जा सकते हैं जिसमें चार वेदों का अध्ययन पूरा किया जा सकता है। शेष जीवन में इसी प्रकार से अन्य उपयोगी साहित्य पढ़ा जा सकता है। अतः स्वाध्याय का स्वभाव सभी व्यक्ति को अपने अन्दर उत्पन्न करना चाहिये। इससे हानि तो कुछ नहीं होगी परन्तु लाभ अनेकों हैं जिसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। शास्त्रों में स्वाध्याय की महत्ता अथवा लाभ बताते हुए कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति सारी पृथिवी को रत्नों से ढक कर दान कर दे तो भी उसको वह फल प्राप्त नहीं होता जो कि एक सुविधापूर्वक स्थिति में नियमित स्वाध्याय करने वाले को प्राप्त होता है। हमें लगता है कि स्वाध्याय से इस जन्म में तो लाभ होता ही है इसके साथ स्वाध्याय से जो संस्कार बनते हैं वह सभी हमारे अगले जन्म में भी हमें प्राप्त होते हैं।

स्वाध्याय से इस जन्म में भी शारीरिक, बौद्धिक व आत्मिक उन्नति होती है और अगले जन्म में भी। स्वाध्याय करते हुए हम ईश्वर, जीव व सृष्टि के स्वरूप को भली भांति जानकर उससे लाभ उठा सकते हैं। स्वाध्याय करने से पाप से बचा जा सकता है और धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को जानकर उसे प्राप्त भी किया जा सकता है। हम तो कहेंगे कि स्वाध्याय व्यक्ति का ऐसा धन है जिसके सामने अन्य सभी भौतिक धन तुच्छ है। इसी कारण प्राचीन काल से हमारे देश में धन कुबेरों की पूजा व स्तुति न होकर सर्वस्व त्यागी ज्ञानवान समाज के सर्वहितकारी साधुओं की पूजा व सम्मान किया जाता था। यही सच्चे ज्ञानी परोपकारी साध ु–महात्मा ही सच्चे तीर्थ कहलाते थे न कि आजकल के गंगा–स्नान, बद्रीनाथ नाथ व अन्य स्थान आदि। वैराग्य की परिभाष भी यही है कि ज्ञान की पराकाष्ठा। यह पराकाष्ठा स्वाध्याय से ही प्राप्त की जा सकती है। इससे वैराग्य होगा जिसका अर्थ है कि भौतिक पदार्थों व अपने सम्बन्धि ायों से राग नही रहेगा। इस स्थिति के बनने पर मन स्वतः ईश्वर की शरण में जायेगा व उसमें लगेगा और ईश्वर की कृपा से ईश्वर प्राप्त होगा। यही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। आईये, नियमित स्वाध्याय का व्रत लें और अपने जीवन को पूर्ण उन्नत बनायें।

196 चुक्खूवाला–2 देहरादून–2

thearyasamaj.org

'ईश प्रार्थना और प्रारब्ध'

—मनमोहन कुमार आय

हम इस लेख में प्रार्थना और प्रारब्ध पर विचार कर इन दोनों के परस्पर सम्बन्ध पर भी विचार करेंगे। प्रार्थना एक प्रकार से किसी से कुछ मांगना होता है। हमें जब किसी सरकारी विभाग से कुछ मांगना होता है तो हम प्रार्थना पत्र लिखते व भेजते हैं। प्रार्थना प्रायः अपने से बड़े व्यक्ति से की जाती है। अपने से आयु में छोटे परन्तु ज्ञान व साधनों में अधिक से भी प्रार्थना कर सकते हैं। एक वष्द्ध रोगी एक युवा डाक्टर के पास उपचार हेतु जाता है। वहां वह डाक्टर से अपने स्वास्थ्य को ठीक करने की प्रार्थना करता है। डाक्टर उसका परीक्षण कर उसका उपचार कर उसे स्वस्थ कर देता है। इसी प्रकार से हम अपने जीवन में अनेक प्रकार के सुखो को भोगते रहते हैं और प्रसन्न व आनन्दित रहते हैं। परन्तु यदा—कदा व कभी—कभार दुख भी आ जाते हैं। विचार करने पर उसका कारण हम स्वयं ही होते हैं। कई बार हमें कारण पता नहीं चलता और दूसरों के कारण भी कई बार हमें दुःख प्राप्त होते हैं। इन दुःखो से बचना होता है। अनेक दुःखों का हम अपनी बुद्धि व ज्ञान के अनुसार समाधान भी कर लेते हैं फिर भी कई दुःख ऐसे होते व हो सकते हैं जहा हम विवश हो जाते हैं। हमें तब ज्ञानी, विद्वान, अनुभवी सामाजिक लोगों की शरण लेनी होती है। उनके परामर्श व सहयोग से भी अनेक दुःख व कष्ट दूर किये जा सकते हैं परन्तु समस्त दुःखों का उपचार उनके पास भी नहीं होता। ऐसी भी स्थिति आ सकती है जब हमें ईश्वर की शरण में जाना पड़ सकता है। वहां हम आंखे बन्द कर ईश्वर को दुःख बताते हैं। आंखे बन्द कर हम अपने दुःख को अच्छी तरह से व्यक्त कर सकते हैं। इससे मन इधर—ऊधर कम भागता है। आंखे बन्द कर ईश्वर से प्रार्थना करने से हमारी प्रार्थना उसके पास पहुंच जाती है। ईश्वर अन्तरयामी है, अर्थात् वह हामरी आत्मा के भीतर भी है और बाहर भी है, अतः वह सब कुछ जानता व समझता है। प्रार्थना करने से पहले भी उसे सभी स्थिति का पता होता है तथा प्रार्थना करने पर भी याचक के भावों का उसे पता हो जाता हैं। ईश्वर संसार की सबसे बड़ी शक्ति है। उसके लिए याचक की प्रार्थना को पूरा करने में कोई कठिनाई नहीं है। परन्तु उसके भी कुछ नियम व सिद्धान्त हैं। उसके अनुसार ही वह कार्य करता है। हम जैसी प्रार्थना करते हैं उसके अनुरूप हमारा पुरूषार्थ भी होना चाहिये। इसके साथ यहां हमारा प्रारब्ध भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमें अपने पूर्व कर्मों, इस जन्म व पूर्व जन्मों का, स्मरण नहीं होता परन्तु ईश्वर को सब कुछ स्मरण व ज्ञात होता है। वह सभी पक्षों पर विचार कर निर्णय करता है। कई बार हमारे दुःख व कष्ट पूरी तरह से दूर हो जाते हैं और कई बार प्रारब्ध और ईश्वरीय सिद्धान्तों जो कि न्याय पर आधारित होते हैं, हमें पूर्व कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। इसमें ईश्वर का दोष न होकर हमारा ही दोष होता है। संसार में भी हम ऐसा ही देखते हैं। हम गलती करते हैं, माता—पिता—आचार्य—न्यायाधीश आदि हमें सजा देते हैं। कई बार हमारे क्षमा मांगने व भविष्य में ऐसा कभी न करने पर भी हमारी बात स्वीकार नहीं की जाती और हमारे अपराध व गलती के अनुसार कुछ कम या अधिक दण्ड व सजा हमें दी जाती है। इसी प्रकार शाश्वत सिद्धान्त "अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कष्तं कर्म शुभाशुभम्।" के अनुसार हमें पूर्व विस्मष्त कर्मों का दण्ड मिलता है। ऐसी स्थिति में याचक को अधीर नहीं होना चाहिये और नास्तिकता के विचारों को अपने मन में नहीं आने देना चाहिये अपितु यह समझना चाहिये कि चलो, हमने अपने पूर्व कर्मों का कुछ फल भोग लिया है, आगे गलत काम नही करेंगे। ऐसा मानकर ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिये और भविष्य में गलत कर्मों के प्रति पूरी सावधानी बरतनी चाहिये।

thearyasamaj.org

प्रार्थना प्रायः अपने से बड़े व समर्थ व्यक्ति व सत्ता से की जाती है। इस संसार में सबसे बड़ा परमात्मा वा ईश्वर है। वह एक चेतन सत्ता है। वह सर्वातिसूक्ष्म होने से सर्वव्यापक व सर्वान्तरयामी है। वह हमारे मन और आत्मा के अन्दर भी व्यापक है इस लिए हमारे मन के प्रत्येक विचार, संकल्प, सुख व दुःख को अच्छी तरह जानता व पहचानता है। उससे प्रार्थना करने से मन हल्का होकर दुःख की मात्रा में कमी आती है। हमारा कर्तव्य पूरा हो जाता है। ईश्वर हमारी पात्रता और प्रारब्ध के अनुसार हमारी प्रार्थना को पूरी करता है। हमें ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिये और किसी भी स्थिति में अधीर नहीं होना चाहिये। प्रार्थना का सबसे बड़ा एक लाभ यह भी है कि प्रार्थना करने से जीवात्मा का अभिमान व अहंकार नष्ट होता है। जब हम अपने ज्ञान व शक्ति में बड़े व्यक्ति वा परमात्मा के सामने होते हैं तो हमें अपनी लघुता व अल्प सामर्थ्य का ज्ञान होता है। उससे हमारा अहंकार छू–मन्तर हो जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को प्रातः, सायं व खाली समय में ईश्वर की शरण में बैठकर वेद मन्त्रों से उनके अर्थ सहित पूरी भावना व आस्था से प्रार्थना करनी चाहिये। जब हम ईश्वर की स्तुति व प्रार्थना करते हैं तो इसके साथ उपासना स्वतः हो जाती है। उपासना का लाभ यह है कि ईश्वर से संगतिकरण होता है। जिस प्रकार अग्नि के पास बैठने से शरीर में गर्मी आती है और जल में गोता लगाने से शरीर शीतलता व ठण्डक का अनुभव करता है, उसी प्रकार से ईश्वर के पास बैठने से ईश्वर के गुणों का जीवों के अन्दर प्रवेश होता है। ऐसा करने पर जीवात्मा के धीरे–धीरे सभी दुर्गुण, दुर्व्यस्न और दुःख दूर होकर ईश्वर के अनुरूप गुण, कर्म व स्वभाव बन जाते हैं। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि इतना ही नहीं, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करने से आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि पहाड़ के समान दुःख प्राप्त होने पर भी, मनुष्य वा जीवात्मा, घबराता नहीं है। क्या यह छोटी बात है? पाठक इन पंक्तियों पर संजीदगी से विचार व मनन करें। इससे ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना का रहस्य समझ में आयेगा। महर्षि के जीवन का अध्ययन करने पर उनकी कहीं गई बात का सत्यापन किया जा सकता है।

अब प्रारब्ध पर कुछ विचार करते हैं। प्रारब्ध किसे कहते हैं? प्रारब्ध हमारे पुण्य एवं पाप कर्मों के सम्मिलित व संचित राशि को कहते हैं। जिस प्रकार से हमारा यह मनुष्य जन्म हुआ है, इसी प्रकार इस जन्म से भी पहले अनेकानेक बार हमारे जन्म हुए हैं। जब हम पूर्व के किसी एक जन्म या जन्मों में मनुष्य थे, हमनें उन–उन जन्मों में अनेकानेक शुभ–अशुभ वा पाप–पुण्य कर्म किये थे। मृत्यु होने पर जो पाप व पुण्य अथवा शुभ व अशुभ कर्म भोग करने से शेष रह जाते हैं वह प्रारब्ध व संचित कर्म होते हैं व कहे जाते हैं। यह प्रारब्ध ही भावी जन्मों का आधार है। इस प्रारब्ध के आधार पर मृत्यु के पश्चात जीवात्माओं का नया जन्म मनुष्य योनि में भी हो सकता है और अन्य पशु–पक्षी आदि निम्न योनियों में भी। इसी प्रारब्ध के आधार पर हमारी जाति (मनुष्य–पशु–पक्षी–कीट–पंतग आदि), आयु तथा भोग (सुख व दुःख) परमात्मा जन्म से पूर्व निर्धारित कर जीवात्माओं को भिन्न–2 योनियों में जन्म देता है। जन्म के बाद शैशव अवस्था से गुजरते हुए बाल, किशोर, यौवन, प्रौढ़ तथा वृद्ध अवस्थायें मौसम की तरह बदलती जाती हैं और शरीर त्याग कर इस जन्म और पूर्व जन्मों के अभुक्त कर्मों के अनुसार ईश्वर पुनः मृतक की जीवात्मा को नया जन्म देता है। एक बार पुनः पूर्व अभुक्त संचित कर्मों, जिसे प्रारब्ध कहते हैं, हमारा जन्म होता है। इस जन्म के सभी सुख व दुःख पूर्व जन्मों के कर्मों व कुछ व अनेक इस जन्म के कर्मों पर आधारित होते हैं। आज कल के आधुनिक समय में पापियों को सुखी देख कर तथाकथित बुद्धिजीवी यह मानते हैं कि ईश्वर नाम की कोई सत्ता नहीं है। यदि होती तो पापी सुखी न होते। यदि पापी सुखी हैं तो निश्चित ही ईश्वर नामी सत्ता इस संसार में कहीं नहीं है। हम उन बन्धुओं को एक उदाहरण देकर समझाने का प्रयास करते हैं। एक व्यक्ति ने पुरूषार्थ कर विपुल धन कमाया और उसे बैंक में जमा कर दिया। जहां से उसे अपना वह धन ब्याज सहित मिलने की गारण्टी है। बाद में अज्ञानता, कुसंसार आदि किन्हीं कारणों से वह पाप में प्रवृत हो जाता है। अब उसने काम करना छोड़ दिया है और सुख–सुविध

ाओं के साथ जीवन व्यतीत कर रहा है। क्या उस निकम्मे पापी मनुष्य को सुखी व उसके पास की सुख की सम्पत्ति को देखकर हमें यह कहना चाहिये कि यह निर्धनों के प्रति अन्याय है। वस्तुतः स्थिति यह है कि उसने जो कमा कर जमा कर रखा है, वही उसे बैंक से ब्याज सहित मिल रहा है और उससे वह सुख व सुविधायें उपलब्ध कर पा रहा है। जबकि अन्य निर्धन व्यक्तियों ने पूर्व में पुरूषार्थ आदि कर पूंजी जमा नहीं की जिस कारण वह निर्धन हैं। यह सदाचारी बन्धु तो खर्च करते आ रहे हैं जिससे उनका वर्तमान जीवन सुख–सुविधाओं से रहित होने के कारण दुःख का कारण बना हुआ है। ऐसे अनेक उदाहरण लिये जा सकते हैं

हम ईश्वर को न मानने वाले और सन्ध्या, उपासना, यज्ञ आदि न करने वाले तथा सुपात्रों को दान न देने वाले बन्धुओं को पूरी आत्मीयता से कहना चाहते हैं कि यदि आप सुखी हैं और पापियों को देखकर धर्म कर्म अर्थात् सन्ध्या–उपासना, यज्ञ–अग्निहोत्र, सेवा, परोपकार, दान आदि करना छोड़ बैठे हैं, तो यह उचित नहीं है। आप अपने पूर्व जन्मों व इस जन्म के पुरूषार्थ के कारण सुखी हैं। इस जन्म में आप जो गो–भेड़–बकरी–मछली आदि मांसाहार, सामिष भोजन, अण्डे, सिगरेट, पापाचार, भ्रष्टाचार आदि का जीवन व्यतीत कर रहे हैं उसका फल आपको अगले जन्मों में मिलेगा। तब आपके प्रारब्ध में इस जन्म के सब अच्छे व बुरे कर्म सम्मिलित हो जायेंगे जिसका परिणाम भारी दुःख होगा। यह ऐसा ही होगा कि एक किसान अपने पूर्व के पुरूषार्थ से उत्पन्न अन्न आदि का सेवन करते हुए सुखी बना रहा परन्तु आगे के लिए उसने फसल नही उगाई। ऐसे किसान की भविष्य में जिस प्रकार की दुर्गति सम्भावित होती है, कुछ इसी प्रकार का हमारे साथ भी हो सकता है। अतः सावधान होकर, सोच विचार कर, ज्ञानियों, सदाचारियों, विद्वानों की संगति कर व सद्ग्रन्थों वेद, दर्शन, उपनिषद, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, संस्कार विधि, गोकरूणानिधि, व्यवहारभानु आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय कर अपना कर्तव्य निर्धारण करें और भविष्य की चिन्ताओं से मुक्त हों।

ईश्वर की प्रार्थना और उपासना से हमारा इहलोक और परलोक दोनों सुधरता है। प्रारब्ध में जो अशुभ हैं उसका भोग कर और भविष्य के लिए कर्मों की अच्छी फसल बोकर हमें निश्चिन्त होना चाहिये। आईये, सदग्रन्थों के स्वाध्याय एवं सन्ध्या–उपासना, यज्ञ–हवन, माता–पिता–आचार्यो व वष्द्धों तथा रोगियों की सेवा, परोपकार व दान आदि करने का संकल्प लेकर जीवन व्यतीत करें और अपना अभ्युदय व निःश्रेयस सुनिश्चित करें।

पताः 196 चुक्खूवाला–2 देहरादून–248001

फोनः 09412985121

పిచ్చుక గూడు

(విశ్వపతి సృష్టిలో వింతలు)

కె. సూర్యనారాయణ ఆర్య మంచిర్యాల

నేను ప్రభాత కాలమున నిర్మల భావము
తోడ బావికిన్ స్నానము చేయనేగి,
వట ఛాయలనాగి, నభంబు పైకి చూ
పానినయంత శాంతికిని ఆలయమైన
విధంబు తోచె, నా
మానస మందెదో తళుకుమన్నది
సృష్టిరహస్య కావ్యమై .
2. భానుడు మేల్కనొంది ధర భారము
మాన్పగ మెల్లమెల్లగా
కోనలలోని పద్మముల, గోవుల గాచు
మురారి బాలురన్
దీనుల కర్షకావళిని దీక్షగతట్టియు లేపి
పక్షులన్ గానములోన ముంచి
పసికందువుయై వెడలెన్ నభంబు పై
3. సృష్టికంతకు నూతనపుష్టినొసగి
అరుణకిరణాలు జగతిని అలుముచుండ
ప్రకృతి శోభాయమానమై పరుగులిడగ
ఉల్లమందు నాహ్లాదంబు వెల్లివిరిసే.
4. అట్టి తరుణంబులో నొక చెట్టు చూడ
చెట్టుకొమ్మపై చిరుపిట్ట కట్టుచున్న
గూటినంతయు పరికించి కూరుచుంటి
విస్మితానంద మనమున వేగనేను.
5. ప్రకృతి మాతయై నిన్ను పాలించు
చుండ వాయు దేవుండు నీ
ఇంటినూయ లూప
పతిత పాదనుండిల జేల పాట పాడ
ముదముతో బ్రతుకు నీడ్చుచు
పోదువమ్మ
6. తీయని కిలకిల రవమున
హాయిని చేకూర్చి జనుల నానందముతో
నూయల లూగిన విధమున
చేయుదువే నిపుణరాశి జేజే ఖగమా !
7. అచ్చపు ఈతనార గొనియల్లితివే
గృహమంత లోకులున్
మెచ్చిరి, నీకళానిధికి మేటి వటంచు,
ఇదేమి చిత్రమో
మచ్చుకు వానజల్లు గృహమందున
బోదు
పరాయి పంచలున్
వెచ్చగ నుండబోవు కళ వేదములన్
పఠియించి నేర్చితో
8. నాటి నరుండు ఓడె, నవనాగరికుల్
అసమర్థులైరి, నీ
గూటిని చేయ, చేత నిలగూర్చితి వేగృహ
మెల్ల చక్కగా
నోటికి ఈత నారగొని. నో బిలుపైజులు
నీకు దక్కునే
నూటికి నూరుపాళ్ళు, కళనోటికెయబ్బె
నె బాసు పిచ్చుకా
9. ఒక్క ఇంటిలో రెండేసి చక్కనైన
గదులుగలవమ్మ దంపతుల్ముదము
తోడ బిడ్డలను పెంచుచును ఎట్టి
బెదురులేక కాలమంతయు హాయిగా
గడపవచ్చు
10. ధన్యురాలవు పిట్టమ్మ ధన్యవమ్మ
సాటి రారమ్మ నీ కళకు నేటికైన
బ్రహ్మకే రిమ్మకలుగు నీ బ్రతుకు చూడ
వందనమ్ముల చేయుదు నందుకొనుము

thearyasamaj.org

సాహస వీరుడు నారాయణరావ్ పవార్

నిజాం పాలనలో కిరాతకులను ధైర్యంగా ఎదిరించిన ధీశాలి నారాయణరావ్ పవార్. 'సల్తనత్ ఇస్లామియా ఆసిఫియా' (స్వతంత్ర రాజ్యం) ఏర్పాటుకు కలలు కంటున్న నిజాం ఇక ఎంత మాత్రం బతికి ఉండడానికి వీలు లేదు. నిజాంను అంతం చేసి హైదరాబాద్ సంస్థాన ప్రజలకు విముక్తి ప్రసాదించాలని నిజాం కారుపై బాంబువేసిన యువకిశోరం నారాయణరావ్‌పవార్, అయితే నిజాం ఆ బాంబు విస్ఫోటనంలో ప్రాణాలతో బతికి బయటపడ్డారు. నిజాంపై బాంబుదాడి అప్పట్లో పెను సంచలనం కలిగించింది.

అరాచకం, కిరాతకం

నిజాం పాలనలో సాగిన అణిచివేత, మతవివక్ష, రజాకార్ల దోపిడీ, హింసాకాండలకు విసిగి వేసారిన జనం ప్రాణాలకు సైతం తెగించి నిజాంపై సమరం సాగించారు. వారిలో నిజాంపై బాంబుదాడి చేసిన ధైర్యశాలి నారాయణరావుపవార్. నాటి దమనకాండ ఆయన మాటల్లోనే....

"ఠగ్గులు, పిండార్లీల్లా నిజాం అండతో నాటిరజాకార్లు హైదరాబాద్ సంస్థానంలోని ప్రజలపై. సాగించిన అరాచకాలు నేటి తరానికి చెబితే అర్థమయ్యేవికావు. దోపిడీలు, సాముహిక మానభంగాలు, హత్యలు నిత్యకృత్యమయ్యాయి. ఎప్పుడు ఏ ఇంటిపై విరుచుకుపడతారో తెలియని పరిస్థితి. 'సల్తనత్ ఇస్లామియా ఆసఫియా' ఏర్పాటుకు నిరంతరం కలలు కంటూ నిజాం తనకు ఎదురు తిరిగినవారినల్లా నామ రూపాల్లేకుండా చేస్తూ వచ్చారు. అంతటి భయానక వాతావరణం హైదరాబాద్ సంస్థానంలో నెలకొని ఉన్న రోజుల్లో తొలిసారిగా నేను పదో తరగతి బోర్డు పరీక్షల కోసం వరంగల్ నుంచి హైదరాబాద్ వచ్చాను. అప్పట్లో వరంగల్‌లో పదో తరగతి చదవిన వాళ్లు పరీక్షలకు హైదరాబాద్ రావలసి ఉండేది. హైదరాబాద్ రావాడమంటే అమెరికా, రష్యాకు వెళ్లినట్లుగా గొప్పగా చెప్పుకునేవాళ్లం. ఇంటర్మీడియట్ పరీక్షలు కూడా ఇక్కడే రాశాను. ఇలా పరీక్షల కోసం నగరానికి వస్తున్న నేను నిజాంను ధిక్కరించి అతని పాలనను అంతం చేసేందుకు బాంబుదాడి చేయాల్సి వస్తుందని అనుకోలేదు.

నిజాం పాలనలో ఉర్దూ తప్ప మిగలిని భాషలన్నీ నిరాదరణకు గురయ్యాయి. ఉర్దూరాని వారిని ఎందుకూ పనికిరాని వాళ్లుగా ముద్రవేసేవారు. అందుకే నన్నూ మా తల్లిదండ్రులు ఉర్దూ మీడియంలోనే చదివించారు. మా నాన్న రైల్వే కూలీ. అందువల్ల డిగ్రీ చదువులు చదివించే ఆర్థికస్థితి వారికిలేదు. ఇంటర్, మెట్రిక్ పాసైన తరువాత లా చేయడానికి నగరానికి వచ్చాను. అప్పటికి నిజాం పాలనలో మత వివక్ష దారుణంగా ఉంది. హిందువుల ప్రాణాలకు భద్రత లేదు. మహిళల మానప్రాణాలకూ రక్షణ లేదు. చిన్నప్పటి నుంచే ఆర్యసమాజ సంస్కరణ ఉద్యమాలలో చురుకుగా పాల్గొన్నవాణ్ని. హైదరాబాద్‌లో బాల్‌కిషన్ ప్రత్యేకంగా బాంబే టైలర్స్ నడిపేవారు. మంచి దేశభక్తుడు. అలాగే గన్‌ఫౌండ్రీలో పండిట్ విశ్వనాథ్, జి.నారాయణస్వామి, గండయ్య అలియాస్ గంగారామ్, జగదీశ్, రెడ్డి పోచనాథంలతో పరిచయమైంది. మేమంతా కలిసి నిజాం నిరంకుశ పాలన నుంచి ప్రజలకు విముక్తి కలిగించాలని నిర్ణయం తీసుకున్నాం. బాంబుల కోసం షోలాపూర్ వెళ్లాం. అక్కడ కొండాలక్ష్మణ్ బాపూజీ కలిశారు. బాపూజీ కూడా నిజాంపై రహస్యంగా పోరు సాగిస్తున్నారని తెలిసి అందరి లక్ష్యం ఒక్కటే అయినందుకు ఎంతో సంతోషించాం.

నిజాంపై దాడి

1947 డిసెంబరు 4వ తేదీన నిజాం హత్యకు పథకం సిద్ధంచేశాం. మొదట నేను నిజాం కారుపై బాంబువేయాలి. అది గురి తప్పి నిజాం ముందుకుపోతే గంగారామ్, జగదీశ్‌లు దాడి చేయాలి. రోజూలాగే ఆ రోజు నిజాం సవారీ బయలుదేరింది. కింగ్‌కోఠి నుంచి కారు ఆల్‌సెయింట్స్ దగ్గరకు రాగానే కారుపై బాంబు వేశాను. అది కారు తలుపునకు తగిలి రోడ్డుపై పడి పేలింది. రెండో బాంబు తీసేలోగానే పోలీసులు నన్ను పట్టుకున్నారు. రక్తం కారేలా కొట్టారు. నిజాం కారు ముందుకు వెళ్లి ఉంటే అక్కడ గంగారం, జగదీశ్‌లు దాడిచేసేవారు. కానీ కారు వెనక్కు మళ్లింది. నిజాం బతికిపోయారు. ఆ తరువాత గంగారాంను అరెస్టు చేశారు. జగదీశ్ తప్పించుకున్నారు. దీనిపై కోర్టులో విచారణ జరిగింది. అదే కింగ్‌కోఠి బాంబుకేసు, నిజాంను హత్య చేయాలన్నది మా లక్ష్యంగా...నేనూ, గంగారం స్పష్టంగా ప్రకటించాం. శిక్ష వేసుకోమన్నాం. అయినా ప్రభుత్వం మా పక్షాన న్యాయవాదిని నియమించింది. మమ్మల్ని కాపాడాలన్న ఉద్దేశంతో ఆ న్యాయవాది, నిజాంను హత్య చేయడం మా ఉద్దేశం కాదని కోర్టుకు చెప్పారు. మమ్మల్ని అలాగే చెప్పమన్నారు. అలా చెబితే ఉరిశిక్ష తప్పుతుందన్నారు. కానీ మేం 'భౌతిక మృతికి సిద్ధమని....కానీ రాజకీయ మరణాన్ని సహించం' అని న్యాయవాదికి చెప్పాం. కోర్టులో జడ్జి కూడా అడిగారు. మళ్లీ అవకాశం దొరికితే నిజాంను తప్పకుండా అంతం చేస్తామని చెప్పాం. నాకు ఉరిశిక్ష పడింది. గంగారంకు యావజ్జీవ శిక్షవేశారు. ఆ ఉరిశిక్ష అమలుకు నిజాం సంతకం పెట్టేలోగానే, భారత ప్రభుత్వం 1948 సెప్టెంబర్ 17న హైదరాబాద్ విముక్తి అయింది. ఆ తరువాత కొన్ని నెలలు నేను జైలులోనే గడపాల్సి వచ్చింది. ఆ తర్వాత ప్రజల ఒత్తిడికి తలవంచి భారత ప్రభుత్వం నన్ను బేషరుతుగా విడుదల చేసింది. లా చదవడానికి వచ్చిన నేను అలా ఒక నిరంకుశ నిజాంపై దాడి చేయాల్సి వచ్చింది. అదో పీడకల. నిజాం తాబేదార్లు సాగిస్తున్న ఆరాచకాలు చూసి ఎంతగానో కలత చెందాను. అప్పటి యువకులు ప్రజల కష్టాలు తమ కష్టాలుగా భావించేవారు. దేశభక్తి ఉండేది. ఇప్పటి యువత ఎటుపోతున్నారో అర్థం కావడం లేదు. వారి శక్తి సామర్థ్యాలు దేశానికి ఏ మేరకు ఉపయోగిస్తున్నారో అర్థం కావడం లేదు.

"దేశం నాకేమి ఇచ్చిందనేది కాకుండా...నావంతుగా దేశానికి ఏమి ఇస్తున్నాను అని ప్రతి ఒక్కరూ మనసాక్షికి సమాధానం చెప్పుకోవాలి. అలాంటి దృక్పథం యువకుల్లో రావాలి".

నారాయణగూడలో నివసిస్తున్న నారాయణరావ్ పవార్ ఏడు పదుల వయస్సులోనూ నాటి ఉద్యమ స్ఫూర్తికి ప్రతీకగా నిలుస్తున్నారు.

thearyasamaj.org

दयानंद विद्या समिति द्वारा संचालित दयानंद विद्या मंदिर

दयानंद विद्या समिति द्वारा संचालित विद्या मंदिर के विद्यार्थी, जिन्होंने अपने -अपने विद्यालयों में प्रथम स्थान प्राप्त किया है, उन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित करते हुए सभा प्रधान विठ्ठलराव आर्य,

स्वर्ण पदक से सम्मानित करते हुएडॉ. मुरलीधर राव जी, श्री विनायक राव जी, डॉ. चंद्रय्याजी प्रधान समाज, श्री के. वी. रेड्डीजी और श्री वेंकट रामा रेड्डी जी मंत्री समिति,

महबूबनगर जडचर्ला, गदवाल, मकतल और तांडूर के विद्यार्थियों ने समारोह में भाग लिया।

thearyasamaj.org

ओ३म शांति धाम गुरुकुल विद्यालय बेंगलुरू के विद्यार्थी हैदराबाद में

सभा प्रधान मंत्री व अन्य अधिकारियों से मिलते हुए सभा प्रधान विठ्ठलराव आर्यजी ने विद्यार्थियों को विद्या नीति पर संबोधित किया।

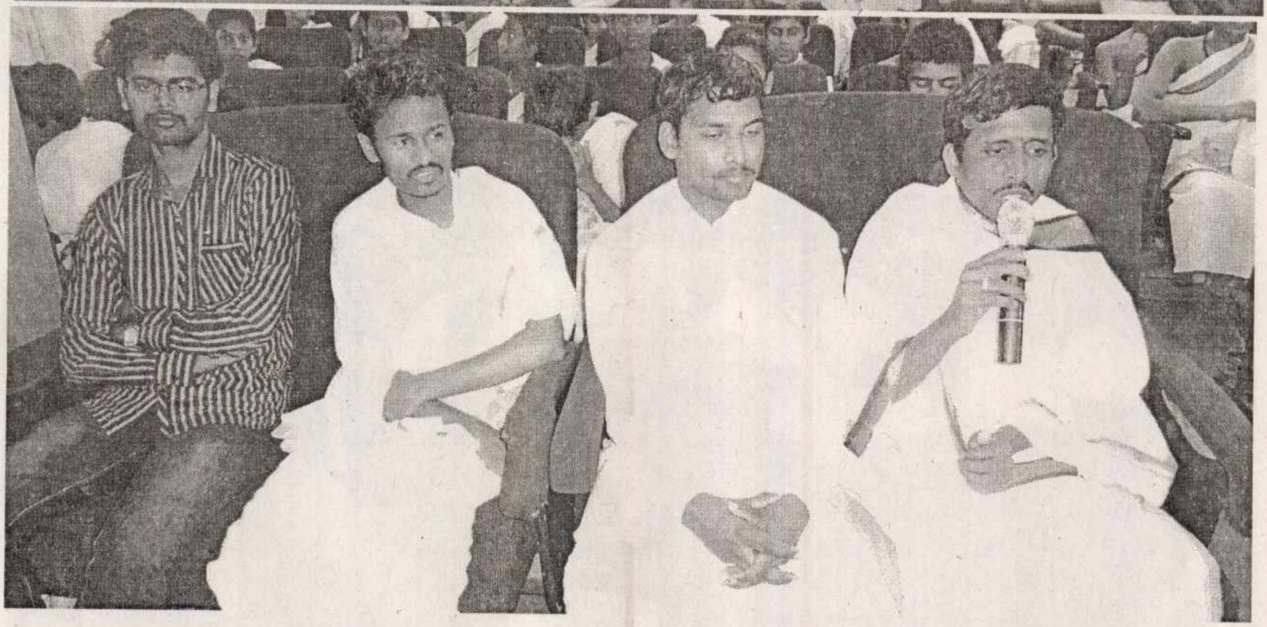

thearyasamaj.org

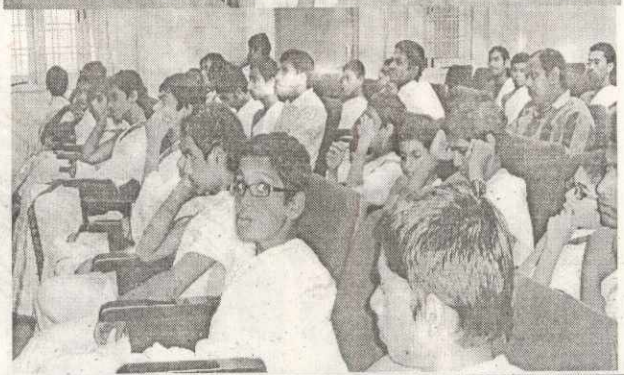

thearyasamai.org

హైదరాబాద్ కా ముక్తి సంఘర్ష్

(హిందీ భాషలో)

(నిరంకుశ నిజాం అత్యాచారాలకు వ్యతిరేకంగా పోరాడిన ఆర్య సమాజ చరిత్ర)

గ్రంథకర్త : డాక్టర్ ఆనంద్ రాజ్ వర్మ

ప్రతి పుస్తకము యొక్క మూల్యము : రూ. 120/-

5 పుస్తకములు కొన్న వారికి తక్కువ రేటుతో అనగా రూ. 80/- పతి పుస్తకము ఇవ్వబడును

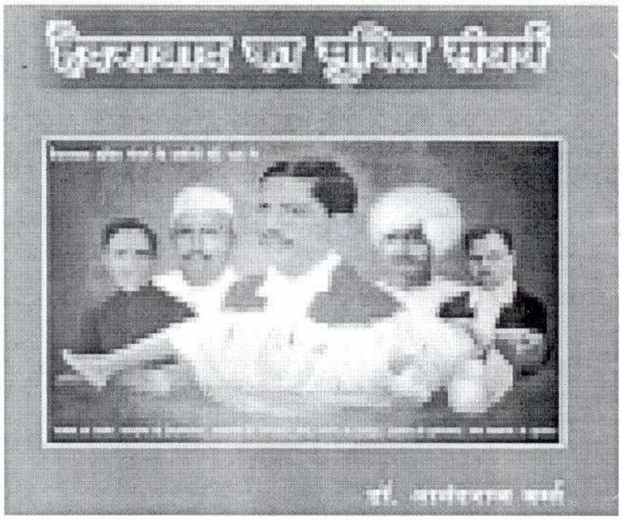

ప్రచారార్థము ఆర్యసమాజ అధికారులు, ఔత్సాహికులు, అధిక సంఖ్యలో ప్రతులను కొనుగోలు చేసి ఇంటింటా చదువరులైన యువకులకు, విద్యార్థులకు అందజేసి సహకరించాలని విజ్ఞప్తి.

లభించు స్థలము :
ఆర్య ప్రతినిధి సభ కార్యలయము
సుల్తాన్‌బజారు - హైదరాబాదు.
సంప్రదించుటకు ఫోన్ నెంబర్లు :
040-2475 6983, 66758707
అధిక ప్రతుల కొనుగోలుకై తగిన రెటుకు లభించును.

हैदराबाद का मुक्ति संघर्ष

(निरंकुश निज़ामशाही के दौर में अन्याय और अत्याचारों के विरुद्ध आर्य समाज के संघर्ष का इतिहास)

लेखक : डॉ. आनन्द राज वर्मा

मूल्य : रु. १२० प्रति पुस्तक
अधिक पुस्तकें खरीदने पर
रु. ८० प्रति पुस्तक

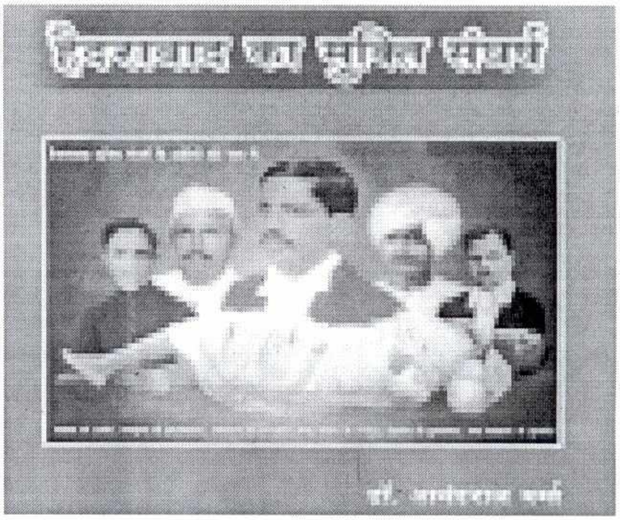

प्रचारार्थ आर्य समाज के अधिकारी एवं उत्साही कार्यकर्ता अधिकाधिक प्रतियों को ख़रीद कर घर-घर, पाठशाला, युवावर्ग एवं छात्रों में वितरित कर सहयोग दें।

प्राप्ति स्थान : कार्यालय
आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. - तेलंगाणा
सुल्तान बाज़ार - हैदराबाद
संपर्क सूत्र : फोन. नं. :
040-2475 6983, 66758707

ఆర్య జీవన్

Date of Publication : 2nd & 17th of Every Month,
Date of Posting : 3rd & 18th of Every Month

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, D.No. 4-2-15
మహర్షి దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95,
phone No. 040 - 24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

చదవండి చదివించండి.

విజ్ఞప్తి

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆం.ప్ర - తెలంగాణ

నూతన పుస్తక ప్రచురణలు

ఆర్య సమాజమనగానేమి?

వైదిక ధర్మము, మహర్షి దయానందుని
జీవిత విశేషాలు,
ఆర్య సమాజ నియమముల విశ్లేషణ

హిందీ మూలము : మహాత్మా నారాయణ స్వామి
గారు "ఆర్య సమాజ్ క్యాహై?"
తెలుగు అనువాదము : శ్రీ అనంతార్య గారు

ప్రతి పుస్తకము యొక్క మూల్యము రూ. 30/-
10 పుస్తకములు కొన్న వారికి తక్కువ రేటుతో
అనగా రూ. 20/- పతి పుస్తకము ఇవ్వబడును

ప్రచారార్థము ఆర్యసమాజ అధికారులు,
ఔత్సాహికులు, అధిక సంఖ్యలో ప్రతులను
కొనుగోలు చేసి ఇంటింటా చదువరులైన
యువకులకు, విద్యార్థులకు అందజేసి
సహకరించాలని విజ్ఞప్తి.

లభించు స్థలము : ఆర్య ప్రతినిధి సభ
కార్యలయము సుల్తాన్‌బజారు,హైదరాబాదు.
సంప్రదించుటకు ఫోన్ నెంబర్లు :
040-2475 6983, 66758707
అధిక ప్రతుల కొనుగోలుకై తగిన రెటుకు
లభించును.

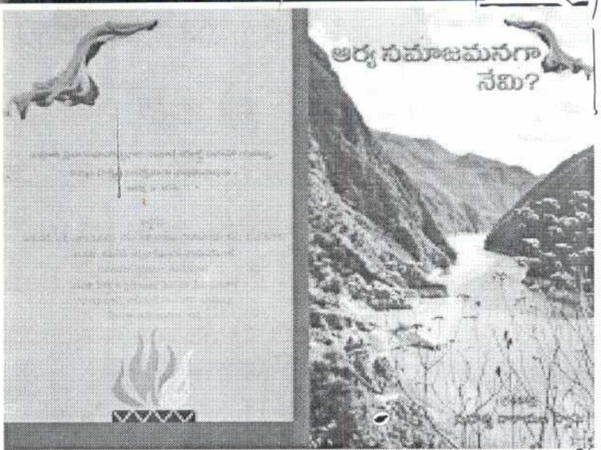

पढ़िए पढ़ाइए

आर्य प्रतिनिधि सभा.

आ.प्र. तेलंगाना के नये प्रकाशन

आर्य समाज मनगानेमि?

वैदिक धर्म, आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द का परिचय.
मूल हिन्दी रचनाः महात्मा नारायण स्वामी कृत

आर्य समाज क्या है ?

का तेलुगु अनुवाद. अनुवादक श्री अनन्तार्य जी
मूल्य : रु. ३०/- प्रति पुस्तक
अधिक पुस्तकें खरीदने पर रु.२०/-प्रति पुस्तक
प्रचारार्थ आर्य समाज के अधिकारी एवं उत्साही कार्य कर्ता अधिकाधिक प्रतियों को ख़रीद कर घर-घर, पाठशाला, युवावर्ग एवं छात्रों में वितरित कर सहयोग दें।
प्राप्ति स्थान : कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा
आ.प्र. - तेलंगाणा, सुल्तान बाज़ार - हैदराबाद
संपर्क सूत्र : फोन. नं. :
०४०-२४७५६९८३, ६६७५८७०७

Editor: VithalRao Arya • acharyavithal@gmail.com
సంపాదకులు : విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సుల్తాన్‌బజార్, హైద్రాబాద్-95 Ph.: 24558707, Email : aryavithal@yahoo.co.in.
संपादक: श्री विट्ठल राव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-९५